पाठ - 3 उपभोक्तावाद की संस्कृति

लेखक परिचय

श्यामाचरण दुबे

जन्म :- सन् 1922 ई.

जन्म स्थान :- मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में

पेशा :- अध्यापन

भाषा :- हिंदी

शिक्षा :- मानव विज्ञान में पीएचडी

उपलब्धियाँ :- भारत के समाज वैज्ञानिक के रूप में प्रसिद्धि, रचनाएं- मानव और संस्कृति, परंपरा और इतिहास बोध, संस्कृति तथा शिक्षा, समाज और भविष्य, भारतीय ग्राम, संक्रमण की पीड़ा, समय और संस्कृति

पुरस्कार :- भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार एवं मूर्ति देवी पुरस्कार

मृत्यु :- सन् 1996 ई.

पाठ परिचय

'उपभोक्तावाद की संस्कृति' पाठ एक निबंध है जिसमें बाजार के गिरफ़्त में जाता हुआ भारतीय समाज का विश्लेषण है। लेखक का मानना है कि विज्ञापन और प्रचार-प्रसार के चमक-धमक में उलझकर लोग वस्तुओं के पीछे भाग रहे हैं। विज्ञापनों के आकर्षण में पड़ने के कारण ना उन्हें वस्तुओं की गुणवत्ता का ख्याल है ना ही अपनी आवश्यकता का। हम अपने मूल संस्कृति को छोड़कर पाश्चात्य चीजों को, चाहे वह वस्तु के रूप में हो या किसी विचार के शक्ल में, वरण करते जा रहे हैं। हम दिखावे की जीवन के आदि हो गए हैं। इसके कारण आज हमारे समाज में बहुत सारी विकृतियां फैल गई हैं, सामाजिक सरोकारों के मायने बदल गए हैं, सामाजिक अशांति और विषमता भी बढ़ रही है, भिन्न-भिन्न वर्गों के बीच में आक्रोश और द्वेष की भावना प्रसारित हो रही है। यह हमारे समाज के लिए भयंकर खतरा का संकेत है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

1. लेखक के अनुसार जीवन में 'सुख' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- लेखक कहता है कि जीवन में सुख का अभिप्राय केवल उपभोग सुख नहीं है मानसिक शारीरिक और सूक्ष्म आराम भी सुख कहलाते हैं। परंतु आजकल लोग केवल उपभोग सुख को ही वास्तविक सुख मान रहे हैं।

2. आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?

उत्तर- जैसे-जैसे हमारी उपभोग-भोग की वृत्ति बढ़ते जा रही है वैसे-वैसे हम उपभोग के दास बनते जा रहे हैं। हम अपनी जरूरतों को अनावश्यक रूप से बढ़ाते जा रहे हैं। लोग तो केवल दिखावे के लिए महंगी घड़ियां, कंप्यूटर, म्यूजिक सिस्टम आदि खरीद रहे हैं। प्रतिष्ठा और दिखावे के नाम पर हम पांच सितारा संस्कृति के गुलाम होते जा रहे हैं।

3. लेखक ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती क्यों माना है?

उत्तर- क्योंकि हम उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण अपनी सांस्कृतिक विरासत को पीछे छोड़ रहे हैं, हम असंयमित होकर अपनी नैतिक मर्यादाओं को भूलते जा रहे हैं। इसके कारण हमारे परंपराओं का क्षरण हो रहा है। यह हमारे सौहार्दपूर्ण सामाजिक परिवेश के लिए भयंकर खतरे की निशानी है। इसलिए लेखक ने इस उपभोक्तावाद की संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती माना है।

4. आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) जाने अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं

उत्तर- इन पंक्तियों में लेखक भारत के एक-एक व्यक्ति के अंदर इस एहसास को भरना चाहता है कि वह उपभोग करते-करते उत्पादों का गुलाम होता जा रहा है। वह जीवन का लक्ष्य उपभोग को ही मान बैठा है। तात्पर्य यह है कि हम उत्पादों का उपभोग नहीं कर रहे हैं बल्कि उत्पाद ही हमारे जीवन का भोग कर रहे हैं।

(ख) प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं चाहे वह हास्यास्पद ही क्यों ना हो

उत्तर- प्रतिष्ठा सबको प्यारी होती है। हर कोई समाज में प्रतिष्ठित होना चाहता है। लेकिन कई बार हम इस प्रतिष्ठा के फेर में पड़कर कुछ ऐसे भी काम कर जाते हैं जो कि देखने वालों के लिए हास्यास्पद हो जाता है। जैसे- मृत्यु के बाद के लिए भी प्रतिष्ठा का ख्याल रखते हुए अपने कब्र पर हरियाली और मनमोहक संगीत आदि की व्यवस्था करना, कितना हास्यास्पद है!

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'उपभोक्तावाद पाठ' के लेखक का क्या नाम है ?

a. माखनलाल चतुर्वेदी b. श्यामायरण दुबे
c. फणीश्वर नाथ रेणु d. प्रेमचंद

2. विज्ञापन और प्रचार के सूक्ष्म तंत्र में कौन-सी शक्ति होती है ?

a. वशीकरण b. सम्मोहन
c. a और b दोनों d. इसमें से कोई नहीं

3. **'वर्चस्व' का क्या अर्थ होता है ?**
   a. वैश्विक b. आडम्बर
   C. दबदबा d. इसमें से कोई नहीं

4. **'प्रतिष्ठा चिन्ह' से आशय है-**
   a. परीक्षा b. रास्ते का चिन्ह
   c. एकाधिकार d. मान सम्मान की बात

5. **सौंदर्य प्रसाधन किसे कहते हैं ?**
   a. सुंदरता बढ़ाने वाली वस्तुओं को
   b. सुंदर वातावरण को
   c. सुंदर दिखने वाली वस्तु को
   d. इनमें से सभी

6. **'हास्यास्पद' का क्या अर्थ है ?**
   a. हँसने योग्य b. हँसते पादप
   c. हर समय d. इसमें से कोई नहीं

7. **आधुनिक बाजार कैसे सामानों से भरा पड़ा है ?**
   a. सस्ती b. खर्चीली
   c. अनुपयोगी d. विलासितापूर्ण

8. **लोग विज्ञापन से प्रेरित होकर सामान खरीदते समय प्रायः किस बात की ओर ध्यान नहीं देते हैं ?**
   a. उत्पादों की गुणवत्ता
   b. विज्ञापनों की सच्चाई
   c. उत्पादों की विश्वसनीयता
   c. इनमें से सभी

9. **हमारी वर्तमान संस्कृति कैसी है ?**
   a. राजनैतिक संस्कृति b. पारंपरिक संस्कृति
   c. अनुकरण की संस्कृति d. वैचारिक संस्कृति

10. **हम किसके उपनिवेश बनते जा रहे हैं ?**
    a. भारतीय संस्कृति के
    b. पाश्चात्य संस्कृति के
    c. खाड़ी देशों की संस्कृति के
    d. मध्य एशिया संस्कृति के

11. **पाठ के अनुसार महिलाओं के साथ पुरुष भी किस दौड़ में शामिल हो गए है ?**
    a. नाचने गाने में
    b. मेहंदी लगाने में
    c. घर के कामकाज करने में
    d. सौंदर्य प्रसाधन का उपयोग करने में

12. **भारत में पहले से ही कौन सी संस्कृति के तत्व थे ?**
    a. सामंती b. वैदिक
    C. पाश्चात्य d. पूर्वी

13. **पाठ के अनुसार किसका वर्चस्व स्थापित हो रहा है ?**
    a. धन का b. नई राजनीति का
    c. नई जीवन शैली का d. इनमें से कोई नहीं

14. **उपभोक्तावाद की संस्कृति का हमारे सामाजिक मूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ?**
    a. परंपराओं का विकास हो रहा है
    b. परंपराओं का अवमूल्यन हो रहा है
    c. हमारे सामाजिक मूल्य सुदृढ़ हो रहे हैं
    d. इनमें से सभी

15. **वर्तमान सामाजिक स्थिति यह है कि सामान्य लोग ललचाई आँखों से-**
    a. गरीबों को देख रहे हैं
    b. अँग्रेजों को देख रहे हैं
    c. विशिष्ट जनों को देख रहे हैं
    d. इनमें से सभी

16. **पाठ के अनुसार वर्तमान समय में लोग खाने-पीने और भोग करने को क्या मानने लगे हैं ?**
    a. सुख b. दुख
    c. अशांति d. इनमें से सभी

17. **लेखक के अनुसार किसके बीच दूरी बढ़ रही है ?**
    a. परिवार के बीच
    b. लोगों के बीच
    c. भिन्न-भिन्न वर्गों के बीच
    d. इनमें से कोई नहीं

18. **हमारे सामाजिक नींव किसके कारण खतरे में आ गई है?**
    a. उपभोक्तावाद की संस्कृति
    b. समाजवादी संस्कृति
    c. सामंतवादी संस्कृति
    d. इनमें से कोई नहीं

19. **लेखक के अनुसार मनुष्य का लक्ष्य क्या होना चाहिए ?**
    a. यश प्राप्ति b. धन प्राप्ति
    c. सुख प्राप्ति d. संपूर्ण विकास

20. **भिन्न-भिन्न वर्गों के बीच जीवन का बढ़ता अंतर किस को जन्म दे रहा है ?**
    a. सामाजिक संतुलन b. सामाजिक मूल्य
    c. अशांति और आक्रोश को d. इनमें से सभी

21. **लेखक के अनुसार प्रदर्शन पूर्ण जीवन शैली को सबसे पहले किस वर्ग ने अपनाया ?**
    a. निम्न वर्ग ने b. संपन्न/उच्च वर्ग ने
    c. मध्यम वर्ग ने d. इनमें से कोई नहीं

22. **पाठ के आधार पर नई जीवन शैली किस वाद पर आधारित है ?**
    a. समाजवाद b. गाँधीवाद
    c. सामंतीवाद d. उपभोक्तावाद

23. **उपभोक्तावाद की संस्कृति के कारण हम किस प्रकार की दासता को स्वीकार करते जा रहे हैं ?**
    a. राजनैतिक दासता b. बौद्धिक दासता
    c. आर्थिक दासता d. इनमें से कोई नहीं

24. **हमारी मानसिकता को परिवर्तित करने में कौन-सा तंत्र काम कर रहा है ?**
    a. विज्ञापन और प्रचार तंत्र

b. पारिस्थितिकी तंत्र
c. राजनैतिक तंत्र
d. प्रवाह तंत्र

25. गाँधी जी ने किसके लिए दरवाजे और खिड़कियाँ खोले रखने को कहा है ?
a. विदेशी उपनिवेश के लिए
b. विदेशी उद्योगों के लिए
c. स्वस्थ सांस्कृतिक प्रभाव के लिए
d. इनमें से कोई नहीं

26. पाठ के आधार पर बताएँ किसका महत्व खत्म हो गया है?
a. प्रतिष्ठा b. परंपरा
c. आस्था d. वेदों को

27. लेखक के अनुसार हमारी आस्थाओं का क्या हुआ है ?
a. रक्षा b. व्यापार
c. क्षरण d. इनमें से सभी

28. लेखक के अनुसार हम कैसे प्रतिमान अपना रहे है ?
a. उत्तम b. सच्चे
c. उन्नत d. झूठे

29. लेखक के अनुसार हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का क्या हो रहा है ?
a. पतन b. विस्तार
c. विकास d. मजबूत

30. उपभोक्तावाद की संस्कृति से हमारे समाज में कैसा प्रभाव पड़ रहा है?
a. नकारात्मक b. सकारात्मक
c. a और b दोनों d. इनमें से कोई नहीं

31. कैसी जीवन शैली हमारे समाज पर हावी होते जा रही है?
a. पारंपरिक जीवन शैली
b. आर्य जीवन शैली
c. नूतन जीवन शैली
d. इनमें से सभी

32. अपनी झूठी प्रतिष्ठा बनाने के लिए हम किसे धोखा दे रहे हैं ?
a. अपनों को b. दूसरों को
c. देशवासियों को d. विदेशियों को

33. लोगों को आज कल लज्जा आती है-
a. स्वयं की संस्कृति का कपड़ा पहनने में
b. विदेशी संस्कृति का कपड़ा पहनने में
c. महंगे कपड़े पहनने में
d. इनमें से सभी

34. पाठ के लेखक ने पाठ में मुख्य रूप से किस मुद्दे पर विचार किया है ?
a. विज्ञापनों की तड़क-भड़क
b. उपभोक्ताओं की भिन्नता
c. वर्ग भिन्नता
d. उपभोग-भोग की वृत्ति

35. पाठ के अनुसार हमारा समाज किसके गिरफ्त में आता जा रहा है ?
a. विदेशियों के b. सामंतों के
c. छद्म आधुनिकता के d. आध्यात्मिकता के

36. हम झूठी संतुष्टि के लिए तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं ? इसके कारण क्या नुकसान हो रहा है?
a. मर्यादाएँ टूट रही है
b. नैतिक मानदंड ढीले पड़ रहे हैं
c. स्वार्थपरता बढ़ रही है
d. इनमें से सभी

37. उपभोक्ता संस्कृति के फैलाव के कारण हमारे संसाधनों का क्या हो रहा है ?
a. घोर अपव्यय b. संचयन
c. सदुपयोग d. इनमें से सभी

38. लेखक के अनुसार जीवन की गुणवत्ता किससे नहीं सुधरने वाली ?
a. अंडे के छिलके से b. आलू के चिप्स से
c. टोमाटर सॉस से d. इनमें से कोई नहीं

39. निम्न में से कौन-सा शब्द 'परिधान' का पर्यायवाची है ?
a. कपड़ा b. वस्त्र
c. पट d. इनमें से सभी

40. हमारे समाज में भोग की आकांक्षाएँ किसको छू रही है ?
a. ज़मीन को
b. बहुत सारी वस्तुओं को
c. आसमान को
d. इनमें से कोई नहीं

41. गाँधी जी ने किस बुनियाद पर कायम रहने की बात कही है?
a. अपनी सांस्कृतिक बुनियाद पर
b. अपने हित में
c. अपनी मिट्टी पर
d. इनमें से कोई नहीं

42. लेखक अंतरराष्ट्रीय खाद्य पदार्थ को क्या समझता है ?
a. स्वादिष्ट b. कूड़ा खाद्य
c. दुर्लभ खाद्य d. इनमें से सभी

43. उपभोक्ता संस्कृति के कारण हमारा कौन-सा उद्देश्य पीछे छूट रहा है ?
a. हमारी आज़ादी का
b. पुरुषों की आज़ादी का
c. देश के सम्पूर्ण विकास का
d. देश के जवानों के विकास का

44. 'अनुकरण' का क्या अर्थ है ?
a. परमाणु b. नकल करना

c. खत्म करना d. शुद्ध करना

45. लेखक के अनुसार लोग अब कब्रो में क्या व्यवस्था करते हैं ?
a. मनचाहे फूल b. पानी के फव्वारे
c. मंद ध्वनि में संगीत d. इनमें से सभी

46. 'महंगी है पर आपके <u>सौंदर्य</u> में निखार ला देगी' रेखांकित पद क्या है ?
a. क्रिया b. संज्ञा
c. विशेषण d. इनमें से कोई नहीं

47. 'गंगाजल' कौन सा समास है ?
a. तत्पुरुष b. कर्मधारय
c. बहुव्रीहि d. द्विगु

48. 'शीघ्र' शब्द के साथ मिलकर कौन-सा पद नहीं बनेगा ?
a. शीघ्रता b. यथाशीघ्र
c. शीघ्रमय d. शीघ्रातिशीघ्र

49. 'परिधान' शब्द में कौन-सा उपसर्ग लगा हुआ है ?
a. प्र b. प
c. परिधि d. परि

50. परंपरा शब्द का सही वर्ण विच्छेद क्या है?
a. प्+अ+र्+अ+म्+प्+अ+र्+आ
b. प+र+म्+प+रा
c. प+अ+र+अ+म+प+अ+र+आ
d. प्+अ+र्+अ+म+प्+अ+र्+आ

51. 'आधुनिक' का विलोम शब्द होगा-
a. अत्याधुनिक b. सांस्कृतिक
c. प्राचीन d. आध्यात्मिक

52. निम्न में से सही वर्तनी वाला शब्द कौन-सा है ?
a. हासयास्पद b. हास्यास्पद
c. हसियापद d. इनमें से कोई नही

53. निम्न में से किस शब्द का बहुवचन संभव नहीं है ?
a. उत्पादक b. प्रसाधन
c. वनस्पति d. क्योंकि

54. 'हमारे सीमित संसाधनों का घोर अपव्यय हो रहा है' यह किस प्रकार का वाक्य है?
a. सरल वाक्य b. संयुक्त वाक्य
c. मिश्र वाक्य d. इनमें से कोई नहीं

55. 'दिग्भ्रमित होने' का क्या अर्थ है ?
a. सही रास्ते पर चलना b. रास्ते से भटक जाना
c. सो जाना d. दुख में होना

56. 'अस्मिता' शब्द का क्या अर्थ है ?
a. अस्तित्व b. पहचान
c. a और b दोनों d. इनमें से कोई नहीं

57. प्रस्तुत पाठ में निम्न में से कौन-से शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है ?
a. प्रतिस्पर्धा b. वशीकरण
c. अवमूल्यन d. सार्वभौमिक

58. श्यामाचरण दुबे का जन्म कब हुआ था ?
a. सन् 1927 ई. b. सन् 1922 ई.
c. सन् 1942 ई. d. सन् 1947 ई.

59. श्यामाचरण दुबे का जन्म कहाँ हुआ था ?
a. मध्य प्रदेश b. उड़ीसा
c. बिहार d. उत्तर प्रदेश

60. श्यामाचरण दुबे ने अपनी उच्च शिक्षा कहाँ से प्राप्त की ?
a. नालंदा विश्वविद्यालय
b. कलिंग विश्वविद्यालय
c. नागपुर विश्वविद्यालय
d. दिल्ली विश्वविद्यालय

61. श्यामाचरण दुबे ने किस विषय में पीएचडी की है ?
a. हिंदी b. मानव विज्ञान
c. समाजशास्त्र d. गणित

62. श्यामाचरण दुबे का देहांत कब हुआ ?
a. सन् 1996 ई. b. सन् 1971 ई.
c. सन् 1986 ई. d. सन् 1991 ई.

63. श्यामाचरण दुबे का जन्म मध्य प्रदेश के किस क्षेत्र में हुआ ?
a. जबलपुर b. बुंदेलखंड
c. उज्जैन d. इनमें से कोई नहीं

64. कौन-सी रचना श्यामाचरण दुबे की नहीं है?
a. मानव और संस्कृति
b. मानव इतिहास का बोध
c. संस्कृति तथा शिक्षा
d. संस्कृति के चार अध्याय

65. कौन सी रचना श्यामाचरण दुबे की नहीं है ?
a. समाज और भविष्य b. भारतीय ग्राम
c. सोजे वतन d. संक्रमण का पीड़ा

66. इनमें से कौन सी रचना श्यामाचरण दुबे की है ?
a. विकास का समाजशास्त्र b. आधे- अधूरी
c. सांवले सपनों की याद d. मेरे बचपन के दिन

67. कौन-सी रचना श्यामाचरण दुबे की है ?
a. बीजक b. समय और संस्कृति
c. गोदान d. युगधारा

68. श्यामाचरण दुबे की लेखों या रचनाओं में प्राय: लोग होते हैं-
a. भारत के जनजातीय समाज b. ग्रामीण समुदाय
c. a और b दोनों d. इनमें से कोई नहीं

69. इस पाठ को किस वर्ग के लोगों को पढ़ना चाहिए ?
a. उच्च या संपन्न वर्ग b. मध्यम वर्ग
c. निम्न वर्ग d. इनमें से सभी

70. इस पाठ से क्या सीख मिलती है ?

a. हमें अपने संस्कृति को संरक्षित करना चाहिए
b. हमें दिखावे और आडंबर से मुक्त रहना चाहिए
c. हमें राष्ट्र के संपूर्ण विकास के हित में काम करना चाहिए
d. इसमें से सभी

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. b,	21. b,	41. a,	61. b,
2. c,	22. d,	42. b,	62. a,
3. c,	23. b,	43. c,	63. b,
4. d,	24. a,	44. b,	64. d,
5. a,	25. c,	45. d,	65. c,
6. a,	26. b,	46. b,	66. a,
7. d,	27. c,	47. a,	67. b,
8. a,	28. d,	48. c,	68. c,
9. c,	29. a,	49. d,	69. d,
10. b,	30. a,	50. a,	70. d,
11. d,	31. c,	51. c,	
12. a,	32. a,	52. b,	
13. c,	33. a,	53. d,	
14. b,	34. d,	54. d,	
15. c,	35. c,	55. b,	
16. a,	36. d,	56. c,	
17. c,	37. a,	57. d,	
18. a,	38. b,	58. b,	
19. d,	39. d,	59. a,	
20. c,	40. c,	60. c,	

अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. उत्पादों को समर्पित होने का क्या आशय है?

उत्तर- उत्पादों को समर्पित होने का आशय है- उत्पादों के उपभोग में ही सारा जीवन लगा देना।

2. पाठ में प्रतिष्ठा के किस हास्यास्पद रूप का वर्णन है?

उत्तर- अमेरिका में अंतिम संस्कार और अंतिम विश्राम-स्थल के लिए अच्छा प्रबंध करना।

3. 'सांस्कृतिक अस्मिता' क्या है?

उत्तर- सांस्कृतिक अस्मिता का अर्थ है- अपनी सांस्कृतिक परिवेश के कारण अन्य समाज के दृष्टि में अपनी अलग पहचान बनाकर रखना।

4. 'बौद्धिक दासता' क्या है?

उत्तर- बौद्धिक दासता का अर्थ है किसी अन्य को अपने से अधिक बुद्धिमान मानते हुए अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करना बंद कर देना।

5. लेखक के अनुसार जीवन की गुणवत्ता किससे नहीं सुधरेगी?

उत्तर- लेखक कहते हैं कि आलू के चिप्स खाने, विज्ञापनों द्वारा प्रचारित शीतल पेय पीने या बर्गर, पिज़्ज़ा आदि खाने से जीवन की गुणवत्ता नहीं सुधरने वाली।

6. हमारी सामाजिक नींव को किससे खतरा है और क्यों?

उत्तर- हमारी सामाजिक नींव को उपभोक्तावादी संस्कृति से खतरा है।

7. पाठ में वर्णित तथ्यों के आधार पर बताएँ कि लेखक को किस प्रकार की चिंता है?

उत्तर- लेखक के मन में अपने राष्ट्र के संपूर्ण विकास की चिंता है।

8. विशिष्टजन के उपभोक्तावादी आचरण से कौन प्रभावित हो रहा है?

उत्तर- विशिष्टजनों के अंधाधुंध उपभोग-भोग वृत्ति से सामान्य जन प्रभावित हो रहे हैं।

9. लेखक के अनुसार किस कारण से मानव में आक्रोश और अशांति की भावना पैदा हो रही है?

उत्तर- उपभोक्तावादी संस्कृति के फैलाव के कारण समाज अलग-अलग वर्गों में बंट रहा है। इसी कारण से मानव में आक्रोश और अशांति की भावना पैदा हो रही है।

10. लेखक के अनुसार सामाजिक सरोकारों में कमी किस कारण आई है?

उत्तर- उपभोग भोग की वृत्ति लोगों को एक दूसरे से दूर कर रहा है। इसी कारण लोग सामाजिक सरोकारों को भूलकर स्वार्थी होते जा रहे हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. लेखक के अनुसार सुख की परिभाषा वर्तमान समय में कैसे बदल गई है?

उत्तर- सही मायने में सुख आत्मिक शांति तथा व्यक्ति के पास जो संसाधन उपलब्ध हैं उसी में संतोषजनक जीवन व्यतीत करना है। परंतु आज का मनुष्य विभिन्न वस्तुओं के उपभोग भोग को ही सुख मान बैठा है। इस प्रकार वर्तमान समय में सुख की परिभाषा ही बदल गई है।

2. विशिष्ट जन का समाज कौन है?

उत्तर- विशिष्टजन का समाज उस वर्ग को कहा गया है जिसके पास खूब धन है। इसी समाज से हमारे समाज के अन्य वर्गों में भी उपभोग भोग की वृत्ति का प्रसार होता है। यही विशिष्टजन समाज में उपभोक्तावादी संस्कृति के फैलाव का वास्तविक जिम्मेदार है।

3. 'आधुनिकता के झूठे प्रतिमान' का क्या अर्थ है?

उत्तर- सही अर्थों में आधुनिकता वह है जो एक नए प्रकार की जीवन-शैली के साथ-साथ भावों और विचारों के

दृष्टिकोण से नया एवं स्वीकार्य हो तथा वह पूरे समाज के सर्वांगीण विकास में सहायक हो। परंतु आधुनिकता के नाम पर केवल आधुनिक भौतिकी वस्तुओं को अपनाकर यदि वैचारिक स्तर पर कोई परिवर्तन ना हुआ हो तो ऐसी स्थिति को 'आधुनिकता के झूठे प्रतिमान' की संज्ञा दी जाएगी।

4. लेखक ने किन सामाजिक संबंधों पर चिंता जताई है?

उत्तर- लेखक ने निरंतर घट रहे सामाजिक संबंधों पर चिंता जतायी है भोगवाद की प्रवृत्ति समाज में जितनी बढ़ रही है आपसी दूरियां उतनी ही बढ़ रही हैं। अलग-अलग वर्गों के लोगों के जीवन स्तर में भी अंतर बढ़ रहा है।

5. लेखक श्यामाचरण दुबे के अनुसार हम किस प्रकार अन्य निर्देशित होते जा रहे हैं?

उत्तर- इस उपभोक्तावादी परिवेश में लोग बुद्धिमता से काम लेना बंद कर दिये हैं। हमें क्या पहनना है, क्या खाना है, किस तरह के सामानों को इस्तेमाल करना है, ये सारी चीजें उत्पादक कंपनियां विज्ञापनों के माध्यम से तय कर रही हैं। इस प्रकार हम अन्य निर्देशित होते जा रहे हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. उपभोक्तावादी संस्कृति से हमारे समाज को क्या नुकसान हुआ है? अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर- उपभोक्तावादी संस्कृति का फैलाव जैसे-जैसे बढ़ रहा है वैसे-वैसे समाज अलग-अलग वर्गों में बटता जा रहा है। निम्न या सामान्य वर्ग के लोग उच्च अथवा संपन्न वर्ग के लोगों को ललचायी दृष्टि से देखते हैं। इन वर्गों के बीच दूरियां इतनी बढ़ रही हैं कि हमारा सामाजिक सौहार्द दिनोदिन बिगड़ता जा रहा है। लोगों में आक्रोश और अशांति का प्रसार हो रहा है। हमारी आस्थाओं एवं परम्पराओं का क्षरण हो रहा है। हम अपने नैतिक मूल्यों को भूलते जा रहे हैं। समाज में स्वार्थपरता हावी होता जा रहा है। नए तरह के पाश्चात्य संस्कृति को अपनाकर हमारा समाज गंभीर खतरे की ओर बढ़ रहा है। हम जाने-अनजाने में अपने संस्कृति रूपी वृक्ष के डालियों को धड़ाधड़ काटे जा रहे हैं। यदि ऐसा ही चलता रहा तो एक दिन निश्चित रूप से हम अपनी अस्मिता और पहचान को पूरी तरह खो देंगे। हमारा अपना तो कुछ बचेगा नहीं बस दूसरों की नकल करने वाले नकलबाज़ बनकर रह जाएंगे।

2. दिखावे की संस्कृति हमारे निजी जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है?

उत्तर- दिखावा का संबंध प्रतिष्ठा से है। हम स्वयं को समाज में प्रतिष्ठित बताने, अपना मान-सम्मान बढ़ाने तथा रईसी ठाठ-बाट दिखाने के लिए ऐश्वर्यपूर्ण जीवन का प्रदर्शन करते हैं। ऐसा उच्च या संपन्न वर्ग के लोग कर रहे हैं। परंतु इसका प्रभाव पूरे समाज पर पड़ रहा है। उच्च वर्गों से प्रभावित होकर निम्न या सामान्य वर्ग भी इस प्रकार के ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीने को लालायित है। संपन्न वर्ग के लोगों के लिए संसाधनों को जुटाना बहुत सरल है परंतु निम्न या सामान्य वर्ग के लिए ये उतना ही कठिन है। सामान्य वर्ग के लिए इन उपभोग की वस्तुओं का भोग ही जीवन लक्ष्य बन गया है। वह इसी में अपनी सारी पूँजी व्यय कर रहा है। हम सामान्य वर्ग के लोग एक ऐसी भूख का शिकार होते जा रहे हैं जो कभी मिटेगी ही नहीं क्योंकि यह भूख पेट की नहीं आत्मा की भूख है। बस यहीं से असंतोष और अशांति के तत्व पनप रहे हैं जो हमें कई बार मानवीयता की सीमा लांघने पर मजबूर कर रहा है। इस प्रकार की स्थितियां हमारे समाज के भविष्य के लिए बहुत बड़े संकट की घंटी है।

3. वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होनी चाहिए या उसका विज्ञापन? तर्कपूर्ण उत्तर दें।

उत्तर- विज्ञापन में सम्मोहन और वशीकरण की शक्ति होती है। उत्पादक कंपनियां बड़ी ही चालाकी से हमारे संवेदनात्मक पहलुओं को छूकर हमें विवेकहीन कर देते हैं और इस प्रकार हम उत्पादक कंपनियां के झाँसे में आ जाते हैं। एक ही तरह के उत्पादों की बाजार में भरमार है और सबकी विश्वसनीयता एक जैसी नहीं है। इसलिए हमें कोई भी वस्तु खरीदने से पहले उसकी सही-सही जाँच कर लेने की आवश्यकता है। विज्ञापनों के चक्कर में पड़कर हम यह भी ध्यान नहीं देते कि संबंधित उत्पाद को सरकार द्वारा मान्यता दी गई है या नहीं, वह स्वास्थकर है भी या नहीं अथवा वह उपयोग करने योग्य है भी या नहीं या यह भी के उस वस्तु विशेष की हमें आवश्यकता है भी या नहीं।